❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को आर्यजगत की ओर से
मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी के जन्मोत्सव (रामनवमी) की हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 44, अंक 21 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 12 अप्रैल, 2021 से रविवार 18 अप्रैल, 2021
विक्रमी सम्वत् 2078 सृष्टि सम्वत् 1960853122
दयानन्दाब्द : 198 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

भारत में लगातार बढ़ रहे हैं कोराना के मामले

कोरोना की भयावह स्थिति से बचने के लिए सावधानी और संयम बरतें

दिल्ली सरकार ने उठाया सख्त कदम – 30 अप्रैल, 2021 तक लगाया साप्ताहंत दो दिनों का कर्फ्यू

सरकारी दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए आर्यजन करें अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन – धर्मपाल आर्य

कोरोना विकराल रूप धारण कर चुका है और लोग दहशत में हैं। कोरोना की पहली लहर से जैसे-तैसे बचकर निकल आए, लेकिन मध्यमवर्गीय लोगों को आज भविष्य की चिंता सता रही है। कोरोना का प्रकोप यूं ही बढ़ता रहा तो घरों से कैसे निकल पाएंगे और व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक कार्य कैसे सम्भव होंगे? ऐसे अनेक प्रश्न आज सबके मन में हैं। क्योंकि स्थिति यह हो गई है कि सरकार लोगों को कोस रही है और लोग सरकार को कोस रहे हैं। आज निर्णय बड़े हास्यास्पद से हैं- मसलन-आम आदमी खुले में कोई फंक्शन करता है तो सौ से ज्यादा लोगों को नहीं बुला सकता लेकिन कुंभ मेला हो सकता है, चुनावी रैलियां हो सकती हैं, रोड शो हो सकते हैं और उनमें संख्या पर कोई प्रतिबंध नहीं है।

भारत वैक्सीनेशन के मामले में बेशक पिछड़ रहा हो लेकिन तेजी से आगे बढ़ते हुए इस महामारी से सबसे ज्यादा प्रभावित होने वाला दुनिया का दूसरा देश जरूर बन गया है। आज 15 अप्रैल 2021 को 2 लाख से ज्यादा मामले आए हैं, अब भारत को केवल अमरीका को पछाडना है जो पहले नम्बर पर है। ईश्वर न करे कि हमारा देश यह उपलब्धि हासिल करे। दूसरी लहर का कहर इसलिए ज्यादा है क्योंकि पहली लहर में कोरोना संक्रमित एक व्यक्ति 30 से 40 प्रतिशत लोगों को संक्रमित कर रहा था परंतु इस बार एक कोरोना पीड़ित 80 से 90 फीसदी लोगों को कोरोना बांट रहा है। स्थिति भयावह है, लोग डरे हुए हैं।

महाराष्ट्र, कर्नाटक, गुजरात, दिल्ली, यू.पी. सहित तमाम राज्य कोरोना से निपटने के लिए लाकडाउन को सर्वश्रेष्ठ विकल्प के रूप में देख रहे हैं। नाइट कर्फ्यू तो दर्जन भर से ज्यादा राज्यों में चल ही रहा है। जो हालात पूरे भारत में दिखाई दे रहे हैं, उनसे लोगों को इस बात का पूरा अंदेशा है कि देश में एक बार फिर लाकडाउन लग सकता है। यह आशंका सच भी हो सकती है, बावजूद इसके कि प्रधानमंत्री मोदी ने लाकडाउन की संभावना से इंकार किया है। फिर भी उनके सभी निर्णय जनता और देश हित में ही होते हैं।

इस बीच दिल्ली सरकार ने 15 अप्रैल, 2021 को शनिवार और रविवार का साप्ताहिक कर्फ्यू की घोषणा की है। जबकि रात्रि 10 से प्रात: 5 बजे का कर्फ्यू पहले से ही जारी था। आज की सम्पूर्ण परिस्थिति को देखते हुए मैं सभी आर्यजनों, अधिकारियों, से निवेदन करता हूं कि पूरी सूझबूझ का परिचय देते हुए अपने पारिवारिक और सामाजिक कर्त्तव्यों का निवर्हन करें। करोनो एक अदृश्य शत्रु है लेकिन हमें इंटरनेट के माध्यम से अपनी गतिविधियों को चलाने से भी कोई परहेज नहीं करना चाहिए। सरकार के सभी दिशा-निर्देशों की पालना करते हुए सावधान रहते हुए संयम बरतें। मैं सभी के उत्तम स्वास्थ्य के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूं।

★ **कोरोना की इस भयावह स्थिति में हमें अत्यंत सावधान रहना चाहिए।**
★ **चाहे हालात कैसे भी क्यों न हो पैनिक नहीं फैलाना चाहिए।**
★ **अपनी आयु सीमा के अनुसार वैक्सीन अवश्य लगवाएं।**
★ **मुंह पर मास्क पूरी तरह से लगाना चाहिए।**
★ **नियमित साबुन-पानी से हाथ धोए और सैनीटाइजर का प्रयोग करते रहें।**
★ **आयुर्वेदक काढ़े का नियमित प्रयोग भी लाभदायक माना जाता है।**
★ **अपना और अपने परिजनों का ध्यान रखना चाहिए।**
★ **आर्यसमाजें अपने यज्ञ-भजन-प्रवचन ऑनलाइन रूप से जारी रखें।**

– सभा प्रधान, दिल्ली सभा

आर्य समाज वैदिक सत्संग सभा रोहिणी सेक्टर-11 के भवन का उद्घाटन एवं पांच कुण्डीय यज्ञ सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा से विधिवत् सम्बन्धित आर्य समाज, वैदिक सत्संग सभा, सैक्टर-11 रोहिणी के भवन का उद्घाटन समारोह पांच कुंडीय यज्ञ, भजन एवं प्रवचन के कार्यक्रमों के साथ 11 अप्रैल, 2021 को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर यज्ञ ब्रह्मा आचार्य शिव नारायण शास्त्री जी रहे। पंडित भूपेंद्र आर्य 'प्रेमी' के भजनोपदेश एवं आचार्य राजू वैज्ञानिक के प्रवचन हुए। यज्ञोपरान्त आर्यसमाज के नए भवन का उद्घाटन सम्पन्न हुआ। भवन का उद्घाटन महाशय राजीव गुलाटी जी के कर-कमलों से किया जना था, किन्तु किन्हीं कारणों से उनके उपस्थित न हो पाने के कारण स्व. महाशय धर्मपाल जी के भतीजे श्री वीरेन्द्र गुलाटी के कर-कमलों से वैदिक मन्त्रोच्चार के साथ उद्घाटन सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य, आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली के महामंत्री श्री सतीश आर्य, उ.प. दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री सुरेन्द्र आर्य, एम.डी.एच. परिवार से श्री प्रेम अरोड़ा जी की गरिमायी उपस्थिति रही। इस अवसर पर दिल्ली के अनेक आर्य समाज के अधिकारीगण उपस्थित रहे। आर्यसमाज सै.11 के प्रधान श्री सुरेश कुमार आहूजा, मंत्री श्री गिरीश ग्रोवर एवं कोषाध्यक्ष श्रीमती राज ग्रोवर एवं बहन श्रीमती उषा आहूजा जी ने सभी उपस्थित महानुभावों का धन्यवाद किया।

– सुरिन्द्र चौधरी

देववाणी - संस्कृत **वेद-स्वाध्याय**

पूर्ण आयु प्राप्त करें

तस्मा अग्निर्भारतः शर्म यंसज्ज्योक् पश्यात् सूर्यमुच्चरन्तम्।
यो इन्द्राय सुनुवामेत्याह नरे नर्याय नृतमाय नृणाम्।। - ऋक्. 4/25/4
ऋषिः वामदेवः।। देवता - इन्द्रः।। छन्दः - भुरिक्पङ्क्तिः।।

शब्दार्थ - **नरे** = असली नर **नर्याय** = नरों के हितकारी और **नृणां नृतमाय** = नरों में नरोत्तम **इन्द्राय** = इन्द्र के लिए **यः** = जो पुरुष सुनुवाम **इति** = 'आओ, हम उसका यजन करें' ऐसा **आह** = कहता है **तस्मै** = उसके लिए भारतः **अग्निः** = भरण करनेवाला प्राणाग्नि **शर्म** = अपनी शरणों, सुख को **यंसत** = देता है, वह **ज्योक्** = चिरकाल तक **उच्चरन्तम्** = उदय होते हुए **सूर्यम्** = सूर्य को **पश्यात्** = देखता है।

विनय - "आओ हम इन्द्र का यजन करेंगे" - इस प्रकार जो मनुष्य कहता है, जो स्वयं इन्द्र का यजन करता है और दूसरों को यज्ञ करने की प्रेरणा करता है, जो यह यज्ञ करता और करवाता है, वह मनुष्य निःसन्देह महापुरुष होता है। वह सच्चा ब्राह्मण, मनुष्य-समाज का सच्चा नेता और आदर्श पुरुष बनता है। ओह! वह इन्द्र जो असली नर है, असली पुरुष है, जो हम नरों का एकमात्र हितकारी है और जो हम नरों में 'नृतम' है, हम पुरुषों में पुरुषोत्तम है, उस इन्द्र का यदि हम नर लोग यजन नहीं करेंगे तो और किसका यजन करेंगे? उस नेता 'नर' इन्द्र का, जिसके हाथ में इस विशाल ब्रह्माण्ड की बागडोर है, जो इस चराचर सृष्टि का संचालक है, उस 'नर' का यजन करना मनुष्य-'नर' की उन्नति के लिए आवश्यक है। इस इन्द्र-'नर' का यजन किये बिना मनुष्य अपने मनुष्यत्व की पूर्णता को कभी नहीं प्राप्त कर सकता, पूर्ण नर नहीं हो सकता। इसलिए वे ही महिमाशाली पुरुष अपने पुरुषार्थ को प्राप्त कर रहे हैं जो इन्द्र का यज्ञ कर रहे हैं और करवा रहे हैं।

ऐसे ही इन्द्रयाजी पुरुषों को 'भारत अग्नि' अपने शरण में लेता है, अपना आश्रय, अपना सुख प्रदान करता है। 'भारत अग्नि' वह अग्नि है जो हमारा-हमारे शरीर और इस संसार-शरीर का भरण (धारण, पोषण) करता है। यह प्राणाग्नि है, इसी अग्नि में इन्द्र के लिए यज्ञ किया जाता है। इसमें जब हम इन्द्र के लिए अपने सब भोग्यजगद्रूपी सोम का और भोगेच्छा-रूपी सोमरस का हवन करते हैं तो हममें यह प्राणाग्नि खूब प्रदीप्त होता है और प्राणरूप सूर्य 'इन्द्र' के द्वारा हमारी सोमाहुति को इन्द्र परमेश्वर तक पहुँचाता है। एवं, प्रदीप्त हुआ यह 'भारत अग्नि' हमारा भरण करता है, हमारा पूरा धारण-पोषण करता है। हमें अपना महान् आश्रय, रक्षण, आनन्द प्रदान करता हुआ हमारा धारण और पोषण करता है। हममें 'भारत' प्राण भरपूर होता है और इस प्राण के साथ हमारा सम्पूर्ण मनुष्यत्व विकसित होता है। तब सूर्य देव हमारे लिए चिरकाल तक प्राण, प्रकाश, जागृति और जीवन देता हुआ उदित होता है। हम पूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं। प्राणरूप आदित्य से नित्य नया प्राण-प्रकाश पाते हुए पूर्ण आयु तक उसके दर्शन करते हुए पूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं। इस प्रकार हम महान् शक्ति, महान् जीवनवाले महापुरुष बन जाते हैं। यह सब इन्द्र-यजन की महिमा है। इन्द्रयाजी बनकर भारत अग्नि की शरण पाने की महिमा है।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय **ब्रिटिश शासन के काले कानून जिनका दंश आज भी भुगत रहा है हिन्दुस्तान**

कब मिटेगा कलंक जरायम पेशा कानून का?

.....आज कथित तौर पर बंजारे, नट, कंजर, सांसी कहकर लोग हेय दृष्टि से देखते हैं असल में कभी ये भारत की वीर जनजातियां थी। जो मुगलों से लड़ी और बाद में अंग्रेजों को सीधे तौर पर टक्कर दी। इतिहास का ऐसा उदहारण सन 1025 का है जब गजनी का लुटेरा महमुद गजनवी सोमनाथ मंदिर को लूटने आया तब अजमेर के राजा धर्मगजदेव की हार के बाद भीलों, मीणों और बंजारों ने जंगल में उसकी सेना घेरकर उसे घुटनों के बल ला दिया था। लेकिन राजनितिक सूझबुझ की कमी कहो या संगठन शक्ति की कमी के कारण लुटेरे को बंधक ना बना सकी।.... पाकिस्तान ने 1948 में जबकि भारत सरकार ने 31 अगस्त 1952 को मजबूरी में क्रिमिनल ट्राइब्स एक्ट समाप्त जरूर किया, किन्तु बड़ी युक्तिपूर्वक इसके स्थान पर हैबिचुअल ऑफेंडर्स एक्ट लागू कर दिया इसका अर्थ यह हुआ कि जो ब्रिटिश विद्रोही समुदाय 1952 तक जन्मजात अपराधी माने जाते थे, वे अब आदतन अपराधी माने जाने लगे।.....

आजीविका के लिए कोई साधन नहीं है। न पहचान, न घर, बंजारों समेत करीब 300 जातियों जनजातियों के माथे पर आज भी लिखा हुआ है 'तेरी जात चोर है' यानि जन्मजात अपराधी होने का कलंक। ये कानून कभी भारत में बना था, कानून का नाम था जरायम पेशा कानून।

कैसा लगता होगा जब 12 वर्ष से ऊपर समस्त पुरुषों को प्रतिदिन थाने में हाजिरी देनी पड़ती हो या फिर कैसा महसूस होगा जब घर में किसी नवजात बच्चें की किलकारी गूंजती और उसके बाप को दौड़कर इसकी सूचना तुरंत प्रशासन यानि नजदीक के थाने में देनी पड़ती हो। कैसा लगता होगा? भले ही आपने कभी चोरी या अपराध न भी किया हो, लेकिन सरकार आपको चोर-अपराधी साबित करने के लिए क्रिमनल ट्राइब्स एक्ट बनाकर हमारे ऊपर ये कानून थोप दे। तब हम कैसा महसूस करेंगे? आज सड़कों के किनारे तमाशा दिखाकर अपना पेट पालने वाले बंजारे अपने माथे पर इस कलंक को लेकर जी रहे हैं, यह कलंक उन्हें इतिहास ने दिया है।

दरअसल 1857 की क्रांति का दौर था, समूचे देश में आजादी की बयार चल रही थी। सभी भारतीय जात-पात अलग करके एकजुटता से अंग्रेजों को उनके जलपोतों में फैंककर, वापिस भेजने की तैयारी कर चुके थे। लेकिन क्रांति किन्ही कारणवश विफल हो गयी। नतीजा, ईस्ट इंडिया कंपनी ने हजारों लोगों को बाजारों में और सड़कों पर लटकाकर मार डाला और बहुत से लोगों को कुचल डाला गया। यह ब्रिटिश औपनिवेशिक इतिहास का सबसे बड़ा नरसंहार था। स्वतंत्रता संग्राम के अगले वर्ष एक नवंबर, 1858 को ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया ने कंपनी के अधिकारों को समाप्त कर शासन की बागडोर सीधे तौर पर अपने हाथों में ले ली थी।

अब शुरू हुई अगली कार्यवाही यानि सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में जिन जातियों-जनजातियों ने अंग्रेजों के विरुद्ध हथियार उठा संघर्ष किया और अंग्रेजी शासन को उखाड़ फेंकने के लिए सरकारी सम्पत्ति को भारी नुकसान पहुँचाया, उनसे बदला लेने के लिए इसमें शामिल रही जातियों पर प्रतिशोध स्वरूप दंडात्मक कार्यवाही करते हुये इन जातियों के तमाम गतिविधियों को प्रतिबंधित करने के लिए आपराधिक जनजाति अधिनियम 1871 यानि जरायम पेशा कानून बना दिया।

इसके तहत भारत की कई जनजातियों को आदतन अपराधी, चोर-लुटेरा घोषित कर दिया गया। इनमें से 160 संजातीय भारतीय समुदायों के लोगों के खिलाफ एक प्रकार का गैर-जमानती वारंट जारी कर दिया गया। उन्हें हर सप्ताह या रोजाना थाने में बुलाया जाने लगा। वो अपनी मर्जी से हिल-डुल भी नहीं सकते थे, उनकी गतिविधियों पर कुछ इस तरह से अतिक्रमण हुआ कि बच्चे के जन्म लेते ही थाने में अपराधियों की लिस्ट में नाम लिख दिया जाता था और 12 साल का होते ही थाने में दो बार हाजिरी लगाना। एक गांव से दूसरे गांव जाने के लिए थानेदार के पैरों पर गिड़गिड़ाना पड़ता और लिखित में इजाजत लेकर जाना पड़ता था। अगर इन आपराधिक जनजातीय समुदायों का कोई भी व्यक्ति बिना लाइसेंस के पाया जाता था तो उसे 3 साल तक की कड़ी जेल की सजा दिए जाने का प्रावधान था।

आरम्भ में इस कानून को बनाकर इसे उत्तर पश्चिमी प्रान्त के साथ-साथ अवध और पंजाब में लागू किया गया। धीरे धीरे समूचे देश की अलग-अलग जातियों को इसमें जोड़ते चले गये। वैसे विश्व के लगभग 53 देशों में अंग्रेजों का शासन था, लेकिन क्रिमिनल ट्राइब्स एक्ट केवल भारत में लागू किया गया था। अंग्रेजों की धारणा यह थी कि जिस तरह से भारत में जातिगत व्यवसाय होते हैं जैसे लोहार का लड़का लोहार होता है, बढ़ई का लड़का बढ़ई, किसान का लड़का किसान और चिकित्सक का लड़का चिकित्सक, इसी तरह अपराधी की संतानें अपराधी ही होती हैं। इसलिए भारत की वीर बहादुर लड़ाकू जातियों, जनजातियों की संतानों को भी अनिवार्य रूप से जन्मजात अपराधी मान लिया गया था।

जिन्हें आज कथित तौर पर बंजारे, नट, कंजर, सांसी कहकर लोग हेय दृष्टि से देखते हैं असल में कभी ये भारत की वीर जनजातियां थी। जो मुगलों से लड़ी और बाद में अंग्रेजों को सीधे तौर पर टक्कर दी। इतिहास का ऐसा उदहारण सन 1025 का है जब गजनी का लुटेरा महमुद गजनवी सोमनाथ मंदिर को लूटने आया तब अजमेर के राजा धर्मगजदेव की हार के बाद भीलों, मीणों और बंजारों ने जंगल में उसकी सेना घेरकर उसे घुटनों के बल ला दिया था। लेकिन राजनितिक सूझबुझ की कमी कहो या संगठन शक्ति की कमी के कारण लुटेरे को बंधक ना बना सकी।

यानि घुमंतू जनजातियां भारतीय हिंदू संस्कृति की रक्षक थीं और आज भी हैं। घुमंतू समुदाय गाड़िया लोहारों के त्याग, बलिदान और हिंदू संस्कृति के महान रक्षकों को कौन नहीं जानता? आज उनकी स्थिति बद से बदतर है किन्तु अधिकांश प्रांतीय सरकारें उन्हें अपने प्रांत का नागरिक भी नहीं मानतीं। जबकि बांग्लादेश से आकर घुसपैठियां रोहिंग्या अपना आधार कार्ड बनाकर बैठ गये लेकिन इन वीर जातियों जनजातियों को अभी तक भी भारत की नागरिकता नहीं मिल पाई।

अब आप सोच रहे होंगे कि अब तो अंग्रेज नहीं है या 1947 में देश तो आजाद हो गया था, फिर अब इस कानून का क्या काम!

- शेष पृष्ठ 7 पर

157वें जन्मदिवस (19 अप्रैल) पर विशेष

प्रेरक जीवन के धनी – महात्मा हंसराज जी

महात्मा हंसराजजी सभा संगठन की कलम से व्यक्तिगत पत्र तक नहीं लिखते थे। जो सारा जीवन किराये के मकान में व्यतीत करते रहे हों, जो फकीरी में फटे पेंबन्द लगे कम्बल को ओढ़कर ही सन्तुष्ट बने रहे हों और नये भेंट में आये हुए कम्बलों को छात्रावास में विद्यार्थियों को भिजवा दें ऐसे उच्चादर्श एवं प्रेरक जीवन के धनी व्यक्ति सभा, संगठनों, संस्थाओं में कहां हैं। यदि महात्मा हंसराज जी के जीवन से शिक्षा, प्रेरणा, सन्देश एवं सीख लेना चाहें तो बहुत कुछ सीख ले सकते हैं। जीवन एवं जगत को दिशा दे सकते हैं।

– डॉ. महेश विद्यालंकार

महर्षि दयानन्द के असामयिक निधन के पश्चात् आर्य समाज लाहौर में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन हुआ। ऋषि की स्मृति को अजर-अमर बनाए रखने के लिए तथा 'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए' की भावना से प्रेरित होकर डी.ए.वी. संस्था का सूत्रपात किया गया। सच है कि डी.ए.वी. संस्था ऋषिवर को स्मरणांजलि एवं श्रद्धांजलि है। डी.-की नींव पर डी.ए.वी. बना तथा खड़ा है। डी. (दयानन्द) और उनके विचारों, आदर्शों एवं सिद्धान्तों को हमें कभी भूलना नहीं चाहिए। इस कार्य को सुन्दर, व्यवस्थित तथा सुचारु रूप से चलाने के लिए सबल कन्धा देने वालों में स्वनाम धन्य महात्मा हंसराज का नाम बड़े श्रद्धा सम्मान एवं आदर से लिया जाता है। यहीं से हंसराज जी के जीवन की कहानी आरम्भ होती है। हृदय में सुप्त तप-त्याग, सेवा, मिशनरी भाव आदि जाग गए। ऋषि की विचारधारा एवं शिक्षादर्शन को प्रचारित और प्रसारित करने के लिए जीवन दान का संकल्प ले लिया। घर-परिवार, सम्बन्धी एवं परिचित जन उनसे अच्छी नौकरी करके धन-सम्पत्ति व सुखभोग-साधनों की अपेक्षा कर रहे थे। उन्होंने जीवन की धारा को मोड़ लिया। ऐसे तप, त्याग, सेवा परोपकार धर्मार्थ आदि के भाव विरले महापुरुषों के अन्दर ही जगते हैं।

महात्मा हंसराज जी स्कूल के प्रथम अवैतनिक मुख्याध्यापक बने उनकी लग्न व देख-रेख में स्कूल बड़ी तेजी से अपनी साख, पहिचान तथा सम्मान बनाता हुआ उन्नति के शिखर पर पहुंच गया। कुछ समय के बाद कॉलेज की स्थापना की गई। हंसराज जी उसके प्रधानाचार्य नियुक्त हुए। अपनी लगन, परिश्रम, ईमानदारी, सादगी, सरलता, मितव्ययिता और ऋषि-भक्ति से उन्होंने कॉलेज को विशाल वट-वृक्ष के रूप में परिवर्तित कर दिया। इस उन्नति-प्रगति के पीछे उनका तप-त्याग, सेवा साधना तथा आत्म समर्पण था। ऐसी भाव-भावना प्रेरणा, सेवाभाव आदि लोगों में दुर्लभ होते जा रहे हैं। यह उनके जीवन का प्रेरक पक्ष हम सबको बहुत कुछ सीखने, समझने व करने की प्रेरणा देता है। महापुरुषों के जीवन प्रकाश स्तम्भ होते हैं जो हमें रोशनी देते और सन्मार्ग दिखाते हैं।

महात्मा हंसराज जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व प्रेरक व चुम्बकीय था। ''सादा जीवन उच्च विचार'' की वे जीवन्त मूर्ति थे। उनका जीवन, आचरण व व्यवहार बोलता था। जो भी उनके सम्पर्क में आया, वह प्रभावित होता था। दुबले-पतले, खद्दर पहनने वाले, सिर पर पगड़ी बांधने वाले, तप त्याग सेवाव्रती, बिना कपड़े रंगे महात्मा कहलाये। उन्होंने इस पद की गरिमा व सम्मान को जीवन भर निभाया। उन्होंने अपना जीवन और परिवार बड़ी सादगीपूर्वक व कम से कम खर्च में चलाया। बड़े भाई द्वारा मासिक चालीस रुपयों की सहायता से पारिवारिक जीवन-यात्रा सन्तोष से चलाते रहे।

आज हमारे जीवनों व रहन-सहन से सादगी, सरलता, सहजता तथा मितव्ययिता छूट रही है। महात्मा हंसराज जी सभा संगठन की कलम से व्यक्तिगत पत्र तक नहीं लिखते थे। जो सारा जीवन किराये के मकान में व्यतीत करते रहे हों, जो फकीरी में फटे पेंबन्द लगे कम्बल को ओढ़कर ही सन्तुष्ट बने रहे हों और नये भेंट में आये हुए कम्बलों को छात्रावास में विद्यार्थियों को भिजवा दें। ऐसे उच्चादर्श एवं प्रेरक जीवन के धनी व्यक्ति सभा, संगठनों, संस्थाओं में कहा हैं। यदि महात्मा हंसराज जी के जीवन से शिक्षा, प्रेरणा, सन्देश एवं सीख लेना चाहें तो बहुत कुछ सीख ले सकते हैं। जीवन एवं जगत को दिशा दे सकते हैं।

महात्मा हंसराज जी कॉलेज के प्रधानाचार्य पद को, प्रादेशिक सभा के प्रधान पद को और होस्टल के वार्डन पद को सम्भालते हुए विद्यार्थियों को धर्मशिक्षा, संध्या, यज्ञ, वेदपाठ आदि स्वयं पढ़ाते थे। विद्यार्थियों के धार्मिक व नैतिक जीवन का पूरा ध्यान रखते थे। उनका जीवन बोलता था। उनके क्रियात्मक जीवन से प्रभावित होकर कई नौजवानों में आजीवन सेवा का भाव जाग उठा। वे जिधर चले, उधर ही जनता और सफलता उमड़ पड़ी। उन्होंने संस्था और सेवा के लिए लाखों रुपये एकत्र किए। जनता ने श्रद्धा-भक्ति से उनकी झोली भर दी। उन्होंने वैदिक धर्म, सेवा, शिक्षा और मानव निर्माण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण, ऐतिहासिक और स्मरणीय योगदान दिया है। उनकी सफलता के पीछे सादगी, सेवा, त्याग तथा निर्लोभता थी। वे तड़क-भड़क एवं सुख भोग साधनों को सच्ची सुख शान्ति, सन्तोष प्रसन्नता आदि का आधार नहीं मानते थे। उनके जीवन में धार्मिकता, आध्यात्मिकता, प्रभु भक्ति और ऋषि मिशन की भावना थी। वे वैदिक विचारधारा के प्रचार-प्रसार तथा प्रभाव का सदा ध्यान रखते थे। वे कुशल वक्ता व प्रचारक थे। वे वैदिक जीवन दर्शन एवं धार्मिक शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। उनकी सोच व दृष्टि आधुनिकता व प्राचीनता के समन्वय की रही है। आधुनिक ज्ञान-विज्ञान, अंग्रेजी, गणित आदि विषयों के साथ-साथ जीवन-विद्या की पढ़ाई के भी प्रबल पक्षपाती थे। वे अंग्रेजी पढ़ना बुरा नहीं मानते थे। अंग्रेजियत के प्रभाव व रंग-ढंग को अच्छा नहीं मानते थे। मनुष्य के पास डिग्रियां, पद प्रतिष्ठा, पैसा, सुख भोग साधन आदि सब कुछ है मगर इन्सानियत, नैतिकता व जीवन मूल्य, आचार-विचार, मनुष्यत्व आदि नहीं है तो ये सब कुछ व्यर्थ व महत्वहीन है। वर्तमान शिक्षा-पद्धति में यह कमी व दोष आ रहा है। शिक्षा में धार्मिक, नैतिक, राष्ट्रीय तथा मानवीय जीवन मूल्यों का तेजी से अभाव हो रहा है। इसी कारण समूचा मानव-समाज अशान्ति संघर्ष, हिंसा और विवादों की ओर बढ़ रहा है।

डी.ए.वी. की शिक्षा पद्धति में यह उल्लेखनीय, प्रेरक, महत्त्वपूर्ण, आकर्षक विशेषता रही है। एंग्लो शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थी को भारतीय संस्कार, जीवनदर्शन, राष्ट्रीय, नैतिक, धार्मिक, वैदिक चिन्तन आदि की विचारधारा को समझा व पढ़ा देना। यह विशेषता समस्त डी.ए.वी. संस्थाओं को सबसे अलग सम्मान व पहिचान दिलाते हैं।

महात्मा हंसराज की इच्छा व प्रयास रहता था कि जो विद्यार्थी हमारी संस्था से निकले, उस पर हमारे विचारों, संस्कारों और संस्था की विशेषताओं की छाप हो। उसकी अलग पहिचान हो, उसके रहन-सहन, बोल-चाल, व्यवहार आदि में भारतीयता आधारित व विशेषता हो। उसके जीवन पर वैदिक विचारधारा का प्रभाव हो। वह सच्चे अर्थ में मानव व श्रेष्ठ नागरिक बने। यही सोच-विचार, प्रयास व उद्देश्य भावना महात्मा हंसराज जी के जीवन में सदा रही। इसीलिए वे वन्दनीय, स्मरणीय, प्रशंसनीय और अनुकरणीय है।

वर्तमान डी.ए.वी. परिवार को महात्मा हंसराज जी का जीवन-दर्शन, तप-त्याग सेवा, सादगी, सरलता आदि बहुत कुछ सिखाता, समझाता व प्रेरित कर रहा है। जो डी.ए.वी. की साख, सम्मान, विश्वसनीयता, पहिचान आदि चली आ रही है, उसको हम सब लोगों ने सम्भालना, रक्षा करना और आगे बढ़ाना है। महात्मा हंसराजजी ने अन्तिम समय में खुशहाल चन्द (जो बाद में आनन्द स्वामी बने) को मन की पीड़ा कही थी- ''डी.ए.वी. प्रबन्ध समिति में आर्यत्व पूर्ण जीवन वाले आर्य समाजी लोग कम हो रहे हैं, धर्मशिक्षा व वेद प्रचार की भावना घट रही है। आर्य समाज के काम में शिथिलता व बिखराव आ रहा है। इन बातों का ध्यान रखना।'' महात्माजी की अन्तिम पीड़ा व इच्छा पर हम सब डी.ए.वी. परिवार जन गम्भीरता व ईमानदारी से चिन्तन-मनन और क्रियात्मक सोचें तो निश्चय ही उनका जन्मदिन मनाना सार्थक व सफल होगा और उनकी आत्मा को शान्ति व सन्तोष मिलेगा।

यदि हंसराज दिवस पर यदि हमारे मन, विचार व हृदय में सेवा, त्याग, संयम,

– शेष पृष्ठ 7 पर

प्रेरक प्रसंग

अरे यह कुली महात्मा!

बहुत पुरानी बात है। आर्यसमाज के विख्यात और शूरवीर संन्यासी, शास्त्रार्थ महारथी स्वामी श्री रुद्रानन्दजी टोबोटेकसिंह (पश्चिमी पंजाब) गये। टोबाटेकसिंह वही क्षेत्र है, जहाँ आर्य समाज के एक मूर्धन्य विद्वान् आचार्य भद्रसेनजी अजमेरवालों का जन्म हुआ। स्टेशन से उतरते ही स्वामीजी ने अपने भारी सामान के लिए कुली, कुली पुकारना आरम्भ किया।

उनके पास बहुत सारी पुस्तकें थीं। पुराने आर्य विद्वान् पुस्तकों का बोझ लेकर ही चला करते थे। क्या पता कहाँ शास्त्रार्थ करना पड़ जाए।

टोबाटेकसिंह स्टेशन पर कोई कुली न था। कुली-कुली की पुकार एक भाई ने सुनी। वह आर्य संन्यासी के पास आया और कहा, ''चलिए महाराज! मैं आपका सामान उठाता हूँ।'' ''चलो आर्यसमाज मन्दिर ले-चलो।'' ऐसा स्वामी रुद्रानन्दजी ने कहा।

साधु इस कुली के साथ आर्य मन्दिर पहुँचा तो जो सज्जन वहाँ थे, सबने जहाँ स्वामीजी को 'नमस्ते' की, वहाँ कुलीजी को 'नमस्ते' महात्मा जी, नमस्ते महात्माजी' कहने लगे। स्वामीजी यह देख कर चकित हुए कि यह क्या हुआ! यह कौन महात्मा है जो मेरा सामान उठाकर लाये।

पाठकवृन्द! यह कुली महात्मा आर्यजाति के प्रसिद्ध सेवक महात्मा प्रभुआश्रितजी महाराज थे, जिन्हें स्वामी रुद्रानन्दजी ने प्रथम बार ही वहाँ देखा। इनकी नम्रता व सेवाभाव से स्वामीजी पर विशेष प्रभाव पड़।

– प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

सार्वदेशिक सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दयानन्द सेवाश्रम संघ के अधिकारियों का कोटा दौरा - कई कार्यक्रमों में की भागीदारी

कोटा के कई संस्थाओं ने किया अभिनन्दन - आर्यनेताओं ने की प्रैस वार्ता

समाज की एकजुटता हेतु आर्य समाज हमेशा रहा अग्रणी - विनय आर्य

'आर्य समाज के अंतर्राष्ट्रीय नेता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य ने कहा है कि आर्य समाज कोरोना महामारी संकट एवं अन्य समाजिक सरोकारों में हमेशा अग्रणी रहा है।' ये विचार शुक्रवार 9 अप्रैल, 2021 को कोटा प्रेस क्लब में आयोजित कार्यक्रम

में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि अंग्रेजो के कानूनों ने हिंदू समाज को बांटने का काम किया था। आर्यसमाज मेरिज वेलिडेशन एक्ट के माध्यम से अब समाज में जातिवाद को तोड़ने के लिएह्नप्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के पंजीकृत मंदिरों के माध्यम से विवाह संस्कार कराता है। यह धारणा गलत है कि आर्य समाज गलत तरीके से शादी ब्याह करता है। हर संकट में देश व समाज को सुरक्षित रखने की हमारी जिम्मेदारी का निर्वाह आर्य समाज कर रहा है। बाल विवाह के खिलाफ शारदा एक्ट बनवाने में भी आर्य समाज की बड़ी भूमिका रही। संपूर्ण विश्व में 32 से अधिक देशों में आर्य समाज कीह्न10 हजार से अधिक शाखाएं कार्य कर रही है। कोराना के संदर्भ में उन्होंने बताया कि लॉकडाउन में आर्य समाज ने यज्ञ के माध्यम से कोरोना महामारी के खिलाफ वातावरण बनाया जिसे सरकार के आयुष मंत्रालय ने भी माना है।

अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के महाममंत्री जोगेंद्र खट्टर ने भी आर्य समाज की प्रगति व कार्यक्रमों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि आर्य समाज 250 से अधिक बड़े चिकित्सालयोंह्नवह्न10 हजार से अधिक अनाथ बच्चों के लिए अनाथालयों का संचालन कर रहा है। महामारी के समय लोगों को आयुर्वेदिक काढ़ा पिला कर इम्यूनिटी बढ़ाने का कार्य किया। समाज धार्मिक अंध विश्वासों के खिलाफ जन जागृति के प्रयास करता रहता है। बेटी बचाओ हमारे लिए सिर्फ नारा नहीं है हम महिलाओं का सम्मान कर उन्हें समाज में सशक्त बनाने की दिशा में काम कर रहे हैं।

आर्य उप प्रतिनिधि सभा के संभागीय प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि सिख समाज के ज्ञानी गुरूनाम सिंह अम्बावली, गायत्री परिवार के मुख्य ट्रस्टी जीडी पटेल तथा श्री कौशिक गायत्री आश्रम बोरखेड़ा के संचालक यज्ञ दत्त हाड़ा आदि ने आर्य नेताओं का अभिनंदन किया। आर्य समाज के वरिष्ठ डॉ वेद प्रकाश गुप्ता तथा डीएवी स्कूल की प्राचार्य सरिता रंजन गौतम ने भी अभिनंदन समारोह में विचार व्यक्त किए। एडवोकेट चंद्रमोहन कुशवाहा, नरनदेव आर्य, आचार्य शोभाराम, राधा बल्लभ राठौड़ आदि वरिष्ठ आर्यजन मौजूद रहे। इस अवसर पर आर्य विदुषी डॉ. सुदेश आहूजा, आर्य समाज तिलक नगर के प्रधान ओम प्रकाश तापड़िया, मंत्री नरेंद्र विजयवर्गीय, रेलवे कॉलोनी के प्रधान हरिदत्त शर्मा, मंत्री कर्म सिंह आर्य, रामपुरा के प्रधान कैलाश बाहेती, अंजली विहार की प्रधाना उषा आर्य, तलवण्डी के उप प्रधान लालचंद आर्य, गायत्री विहार के मंत्री उमेश कुर्मी, सूरत सिंह यादव, महिला मंत्री सुशीला कुर्मी, पंडित रामदेव शर्मा, सिख धर्माचार्य ज्ञानी गुरनाम सिंह, बाल संरक्षण समिति के अरूण भार्गव, गायत्री आश्रम बोरखेड़ा के संचालय यज्ञ दत्त हाड़ा, राजेंद्र आर्य मुनि, किशन आर्य हरियाणा आदि आर्यजन उपस्थित थे।

दोनों नेताह्नप्रात: कोटा पहुंचे तथा सड़क मार्ग से रामगंजमंडी गए तथा वहां पर आर्य समाज की स्थापना को लेकर आर्यजनों से चर्चा की। उनके साथ संभागीय प्रधान अर्जुन देव चड्ढा भी साथ रहे।ह्न

वेदभूषण आर्य के मॉडल की प्रशंसा : दिल्ली प्रदर्शनी मे रखे जाएंगे

नई दिल्ली से कोटा पहुंचे आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के महामन्त्री विनय आर्य एवं भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के महामंत्री जोगेंद्र खट्टर ने कोटा के आर्टिस्ट वेदभूषण आर्य द्वारा बनाए गए मॉडल की प्रशंसा की है। साथ ही उन्होंने बताया कि दिल्ली में आयोजित समारोह में आर्टिस्ट वेद भूषण आर्य द्वारा बनाए गए मॉडल की प्रदर्शनी लगवाएंगे। उन्होंने बताया कि आर्य ने मॉडल बनाकर अपनी कला कोह्न निखारा है। उन्होंने वेद भूषण आर्य को आशीर्वाद देते हुए कहा कि दिल्ली में आयोजित समारोह में प्रदर्शनी में इनके मॉडल रखें जाएंगे।

आर्य नेताओं ने की लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला से भेंट

बाल विवाह रोकने विषयक शारदा एक्ट में संशोधन की मांग

कोटा प्रवास पर पहुंचे आर्य समाज के राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला से उनके कोटा स्थित कैंप कार्यालय पर शिष्टाचार भेंट की। मंडल ने लोकसभा अध्यक्ष से भेंट कर उन्हें कोटा में संचालित आर्य समाज की गतिविधियों की जानकारी दी।

शिष्टाचार भेंट के इस अवसर पर

इस बारे में जानकारी देते हुए आर्य उप प्रतिनिधि सभा कोटा के मंत्री लालचंद आर्य ने बताया कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य तथा अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के महामंत्री जोगेंद्र खट्टर ने अपने कोटा प्रवास के दौरान लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला से उनके कोटा स्थित कार्यालय में शिष्टाचार भेंट की।

इस अवसर पर आर्य नेताओं के साथ आर्य समाज कोटा के संभागीय प्रधान अर्जुन देव चड्ढा महामंत्री अरविंद पांडेय संगठन मंत्री गुमान सिंह आर्य तथा डॉ वेद प्रकाश गुप्ता आदि आर्य जनों के प्रतिनिधि आर्य समाज के पदाधिकारियों द्वारा लोक सभा अध्यक्ष का केसरिया पगड़ी, ओम का पीतवस्त्र एवं मोतियों की माला पहनाकर अभिनंदन किया गया।

इस अवसर पर दिल्ली सभा के महामंत्री विनय आर्य ने लोकसभा अध्यक्ष से बाल विवाह को रोकने के लिए बनाए गए कानून शारदा एक्ट में वर्तमान युग की आवश्यकताओं के अनुरूप संशोधन करने का आग्रह किया गया।

इस अवसर पर लोकसभा अध्यक्ष ने आर्य प्रतिनिधियों से कहा कि आर्य समाज के प्रतिनिधि दिल्ली स्थित कार्यालय में लिखित में पत्र प्रदान करें।

कोटा पहुंचने पर हुआ आर्य नेताओं का भव्य स्वागत

कोटा, 11 अप्रैल। आर्य समाज के अंतर्राष्ट्रीय नेता एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य, गुरुकुल व कन्या सेवाश्रम संघ के महामंत्री जोगेंद्र खट्टर व आर्य उपप्रतिनिधि सभा के संभागीय प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा का कोटा से रामगंजमण्डी जाते हुए अनंतपुरा चौराहे पर आर्य समाज के मंत्री राधावल्लभ राठौर, समाजसेवी व आर्य कार्यकर्ताओं ने मंत्रों के उच्चारण के साथ फूल मालाएं पहनाकर स्वागत किया। साथ ही आर्य समाज अमर रहे व वेद की ज्योति जलती रहे, महर्षि दयानंद की जय हो के जोरदार उद्घोष के नारे लगाये।ह्न

महामंत्री विनय आर्य ने अपने शब्दों में कहा कि आर्य समाज जनजागृति एवं जनहित की संस्था है एवं आगे भी जो जनकल्याण हेतु कोटा में अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में कार्य कर रहे हैं उन्हें और आगे बढ़ाया जाएगा।ह्न

स्वागत सम्मान के मौके पर विष्णु गर्ग, ओमप्रकाश गौतम, बिहारी लाल गोचर, बनवारी लाल शर्मा, कमलेश यादव समेत अन्य आर्य कार्यकर्ता मौजूद रहे। अंत में पूर्व पार्षद बृज मोहन गौड़ ने सभी का आभार व्यक्त किया।

श्रीराम जन्मोत्सव (चैत्र शु.नवमी) पर विशेष

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम को जानकर उनके अनुसार अपना जीवन बनाने का संकल्प लेने का पर्व है - रामनवमी

- मनमोहन कुमार आर्य

सृष्टि में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम एवं महर्षि वाल्मीकि जी का जन्म होना आर्यों व हिन्दुओं के लिए अति गौरव की बात है। यदि यह दो महापुरुष न हुए होते तो कह नहीं सकते कि मध्यकाल में वैदिक धर्म व संस्कृति का जो पतन हुआ और महर्षि दयानन्द के काल तक आते-आते वह जैसा व जितना बचा रहा, बाल्मीकि रामायण की अनुपस्थिति में वह बच पाता, इसमें सन्देह है? यह भी कह सकते है कि यदि वैदिक धर्म व संस्कृति किसी प्रकार से बची भी रहती तो उसकी जो अवस्था महर्षि दयानन्द के काल में रही व वर्तमान में है, उससे कहीं अधिक दुर्दशा को प्राप्त होती। अत: मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम व महर्षि वाल्मीकि व उनके ग्रन्थ रामायण को हम महाभारत काल के बाद सनातन वैदिक धर्म के रक्षक के रूप में मान सकते हैं।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम में ऐसा क्या था जिस पर महर्षि वाल्मीकि जी ने उनका इतना विस्तृत महाकाव्य लिखा जिसका आज की आधुनिक दुनिया में सम्मान है? इसका एक ही उत्तर है कि श्री रामचन्द्र जी एक मनुष्य होते भी गुण, कर्म व स्वभाव से सर्वतो-महान थे। उनके समान मनुष्य उनके पूर्व इतिहास में हुआ या नहीं कहा नहीं जा सकता क्योंकि वाल्मीकि रामायण के समान उससे पूर्व का इतिहास विषयक कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है और अनुमान है कि बाल्मीकि जी के समय में भी उपलब्ध नहीं था। श्री रामचन्द्र जी त्रेतायुग में हुए थे। त्रेता युग वर्तमान के कलियुग से पूर्व द्वापर युग से भी पूर्व का युग है। कलियुग 4.32 लाख वर्ष का होता है जिसके वर्तमान में 5,116 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। इससे पूर्व 8.64 हजार वर्षो का द्वापर युग व्यतीत हुआ जिसके अन्त में महाभारत का युद्ध हुआ था। इस पर महर्षि वेदव्यास ने इतिहास के रूप में महाभारत का ग्रन्थ लिखा जिसमें योगेश्वर श्री कृष्ण, युधिष्ठिर, अर्जुन आदि पाण्डव एवं कौरव वंश का वर्णन है। इस प्रकार न्यूनतम 8.64+0.051=8.691 लाख वर्ष से भी सहस्रों वर्ष पूर्व इस भारत की धरती पर श्री रामचन्द्र जी उत्पन्न वा जन्में थे। यह श्री रामचन्द्र जी ऐसी पिता व माता की सन्तान थे जो आर्यराजा थे और जो ऋषियों की वेदानुकूल शिक्षाओं का आचरण वा पालन करते थे। श्री रामचन्द्र जी की माता कौशल्या भी वैदिक धर्मपरायण नारी थी जो प्रात: व सायं सन्ध्या व दैनिक अग्निहोत्र करती थीं।

वाल्मीकि जी ने श्री रामचन्द्र जी के जीवन पर रामायण ग्रन्थ की रचना क्यों की? इस संबंध में रामायण में ही वर्णन मिलता है कि वाल्मीकि जी संस्कृत भाषा के एक महान कवि थे। वह एक ऐसे मनुष्य का इतिहास लिखना चाहते थे जो गुण कर्म व स्वभाव में अपूर्व, श्रेष्ठ व अतुलनीय हो। नारद जी से पूछने पर

श्रीराम नौमी

हिन्द में प्रतिवर्ष आती है, नौमी राम की।
राम का सुमरन करा जाती है नौमी राम की।।
किस तरह का मा-बाप का सत्कार करना चाहिए।
किस तरह से भाई से प्यार करना चाहिए।।
किस तरह दोनों के प्रति उपकार करना चाहिए।
किस तरह से देश का उद्धार करना चाहिए।।
राम के ये गुण बता जाती है नौमी राम की।
राम का सुमरन करा जाती है नौमी राम की।।
चक्रवर्ती राज्य के पद के त्याग ने तीव्र त्याग।
बन में चौदह वर्ष बस जाने का था उत्तम विराग।।
बज रहा था जिस्म की रग-रग में सच्चाई का राग।।
याद यह बातें दिला जाती है नौमी राम की।
राम का सुमरन करा जाती है नौमी राम की।।

- स्व. स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
भू.पू.अधिष्ठाता, वेद प्र.वि, दिल्ली सभा

उन्होंने श्री रामचन्द्र जी का जीवन वृतान्त वर्णन कर दिया जिसको वाल्मीकि जी ने स्वीकार कर रामायण नामक ग्रन्थ लिखा। आर्यजाति के सौभाग्य से आज लाखों वर्ष बाद भी यह ग्रन्थ शुद्ध रूप में न सही, अपितु किंचित प्रक्षेपों के साथ उपलब्ध होता है जिसे पढ़कर श्री रामचन्द्र जी के चरित्र किंवा व्यक्तित्व व कृतित्व को जाना जा सकता है। सभी मनुष्य जिन्होंने वाल्मीकि रामायण को पढ़ा है वह जानते हैं कि श्री रामचन्द्र के समान इतिहास में ऐसा श्रेष्ठ चरित्र उपलब्ध नहीं है और न हि भविष्य में आशा की जा सकती है। यद्यपि भारत में अनेक ;षि मुनि व विद्वान हुए हैं जिनका जीवन व चरित्र भी आदर्श है परन्तु श्री रामचन्द्र जी का उदाहरण अन्यतम है। इतिहास में योगेश्वर श्री कृष्ण जी, भीष्म पितामह, युधिष्ठिर जी और स्वामी दयानन्द सरस्वती आदि के महनीय जीवन चरित्र भी उपलब्ध होते हैं, परन्तु श्री रामचन्द्र जी के जीवन की बात ही निराली है। वाल्मीकि जी ने जिस प्रकार से उनके जीवन के प्राय: सभी पहलुओं का रोचक और प्रभावशाली वर्णन किया है वैसी सुन्दर व भावना प्रधान रचना अन्य महापुरुषों की उपलब्ध नहीं होती है। इतना यहां अवश्य लिखना उपयुक्त है कि महर्षि दयानन्द जी का जीवन भी संसार के महान पुरुषों में अन्यतम है जिसे सभी देशवासियों व धर्मजिज्ञासु बन्धुओं को पढ़कर उससे प्रेरणा लेनी चाहिये।

श्री रामचन्द्र जी की प्रमुख विशेषतायें क्या हैं जिनके कारण वह देश व संसार में अपूर्व रूप से लोकप्रिय हुए। इसका कारण है कि वह एक आदर्श पुत्र, अपनी तीनों माताओं का समान रूप से आदर करने वाले, आदर्श भाई, आदर्श पति, गुरुजनों के प्रिय शिष्य, आदर्श देशभक्त, वैदिक धर्म व संस्कृति के साक्षात साकार पुरुष, शत्रु पक्ष के भी हितैषी व उनके अच्छे गुणों को सम्मान देने वाले, अपने भक्तों के आदर्श स्वामी व प्रेरणा स्रोत, सज्जनों अर्थात् सत्याचरण वा धर्म का पालन करने वालों के रक्षक, धर्महीनों को दण्ड देने वाले व उनके लिए रौद्ररूप, आदर्श राजा व प्रजापालक, वैदिक धर्म के पालनकर्त्ता व धारणकर्त्ता सहित यजुर्वेद आदि के ज्ञाता व विद्वान थे। इतना ही नहीं ऐसा कोई मानवीय श्रेष्ठ गुण नहीं था जो उनमें विद्यमान न रहा हो। यदि ऐसे व इससे भी अधिक गुण किसी मनुष्य में हों तो वह समाज व देश का प्रिय तो होगा ही। इन्हीं गुणों ने श्री रामचन्द्र जी को महापुरुष एवं अल्पज्ञानी व अज्ञानी लोगों ने उन्हें ईश्वर के समान पूजनीय तक बना दिया। बाल्मीकि रामायण के अनुसार श्री रामचन्द्र जी मर्यादा पुरूषोत्तम हैं, ईश्वर नहीं। अजन्मा व सर्वव्यापक सृष्टिकर्ता ईश्वर मनुष्य जन्म ले ही नहीं सकता। यही कारण है कि रामायण को इतिहास का ग्रन्थ स्वीकार कर महर्षि दयानन्द ने उसे विद्यार्थियों की पाठविधि में सम्मिलित किया है।

उपलब्ध साहित्य के आधार पर प्रतीत होता है कि महाभारत काल तक भारत में एक ही रामायण वाल्मीकि रामायण विद्यमान थी। महाभारत के बाद दिन प्रतिदिन धार्मिक व सांस्कृतिक पतन होना आरम्भ हो गया। संस्कृत भाषा जो महाभारत काल तक देश व विश्व की एकमात्र भाषा थी, उसके प्रयोग में भी कमी आने लगी और उसमें विकार होकर नई नई भाषायें बनने लगी। इस का परिणाम यह हुआ कि भारत के अनेक भूभागों में समय के साथ अनेक भाषाये व बोलियां अस्तित्व में आईं जो समय के साथ पल्लिवित और पुष्पित होती रहीं। संस्कृत भाषा के प्रयोग में कमी से वेदों व वैदिक धर्म की मान्यताओं में भी विकृतियां उत्पन्न होने लगीं, जिसके परिणामस्वरूप देश में अवतारवाद की कल्पना, मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष, यज्ञों में हिंसा, मांसाहार का व्यवहार, जन्मना जातिवाद की उत्पत्ति व उसका व्यवहार, छुआछूत, स्त्रियों व शूद्रों को वेदाधिकार से वंचित करने, बालविवाह, पर्दा प्रथा, जैसे विधान बने। समय के साथ मत-मतान्तरों की संख्या में भी वृद्धि होती गई। वैष्णवमत ने श्री रामचन्द्र जी को ईश्वर का अवतार मानकर उनकी पूजा आरम्भ कर दी गई। देश में मुद्रण कला का आरम्भ न होने से अभी हस्तलिखित ग्रन्थों का ही प्रचार था। संस्कृत का प्रयोग कम हो जाने व नाना भाषायें व बोलियों के अस्तित्व में आने के कारण धर्म व कर्म को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से कथा आदि की आवश्यकता भी अनुभव की गई। श्री रामचन्द्र जी की भक्ति व पूजा का प्रचलन बढ़ रहा था। सौभाग्य से ऐसे अज्ञान व अन्धविश्वासों के युग में गोस्वामी तुलसीदास जी का जन्म होता है और उनके मन में श्री रामचन्द्र जी का जीवनचरित लिखने का विचार उत्पन्न होता है। इसकी पूर्ति रामचरित मानस के रूप में होती है। यह ग्रन्थ लोगों की बोलचाल की भाषा में होने के कारण इस ग्रन्थ ने रामचन्द्र जी का ऐतिहासिक व प्रमाणिक ग्रन्थ होने का स्थान प्राप्त कर लिया। इसका प्रचार व पाठ होने लगा। देश के अनेक भागों में उन-उन स्थानों के कवियों ने वहां की भाषा में वाल्मीकि रामायण व रामचरित मानस से प्रेरणा पाकर श्री रामचन्द्र जी के पावन जीवन व चरित्र को परिलक्षित करने वाले अनेक ग्रन्थ लिखे जिससे देश भर में रामचन्द्र जी ईश्वर के प्रमुख अवतार माने जाने लगे व उनकी पूजा होने लगी। आज भी यह चल

- शेष पृष्ठ 7 पर

स्वास्थ्य रक्षा

मोटापा कम कैसे करें?

गतांक से आगे -

यौगिक चिकित्सा में सूक्ष्म व्यायाम, सुबह शाम तेजी से पूरे बदन के अंग-प्रत्यंग को हिलाते हुए यथाशक्ति धीरे-धीरे बढाते हुए 3 से 5 मील तक की सैर करनी चाहिए। इसके अलावा आसनों में, पाद संचालन, उत्तांनपाद आसन, योगमुद्रा, शलभासन, भुजंगासन, धनुरासन, नौकासन, स्वांगासन, हलासन, मत्स्यासन, त्रिकोणासन, पादहस्तासन, ताडासन, चक्रासन, वृक्षासन, नाड़ी-शोधन, कपालभाती, अग्निसारधौती सूर्यभेदी अथवा दीर्घ श्वसन प्राणायाम करें। आसन एवं प्राणायाम का अभ्यास भी धीरे-धीरे बढाते हुए किसी अच्छे योग-विशेषज्ञ की देखरेख में ही करने चाहिए।

यह सारी विधियां, क्रियाएं एवं उपचार आश्रम के परिसर में स्थित 'योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान केन्द्र' के विशेषज्ञों की देखरेख में सुचारू रूप से क्रियान्वित होती हैं।

एक महीने में औसतन अलग-अलग परिस्थितियों में शर्तिया 8-15 किलो वजन बिना किसी साईड इफैक्ट के गारन्टी के साथ यहां पर कम किया जाता है।

उपर्युक्त विधियों को करने के लिए अगर पूरा समय न हो तो आप 'वरदान आरोग्य संस्थान आनन्दधाम आश्रम' में भर्ती होकर प्रशिक्षणात्मक उपचार करवाकर शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक उन्नति का उत्थान करके अपने मानसिक एवं आध्यात्मिक उन्नति का उत्थान करके अपने रोगों से छुटकारा पा सकते हैं। यहां पर पूरा समय देने पर किसी भी किस्म का मोटपा सद्गुरु की कृपा से ठीक हो सकता है।

Continue From Last issue

Makers of the Arya Samaj : Pt. Lekh Ram Ji

At last Pt. Lekh Ram settled down at Jalandhar with his tvife and his only son. There were two reasons for doing so. In the first place, his wife felt quite at home amongst the people of this place. He also wanted to be near Mahatma Munshi Ram in order to complete the biography of Swami Dayanand.

The people who saw Pandit ji at Jalandhar felt what a good husband and a good father he was. They also realized his unselfishness. For a longtime Panditji had been getting only twenty-five rupees a month. When a son was born to him he got himself insured for two thousand rupees.He then began to draw thirty-five rupees a month. But he never applied for any increase in his pay. He was always content with what he got.

He could have made a lot of money from his books, but he never did so. Whatever money he got from them he gave away to the Arya Samaj. His wife also proved to be his best helper in this matter. She never cared for ornaments, nor did she worry about fine clothes. She always remained devoted to the cause that her husband loved. After her husband's death she gave all the money she got from insurance for the purpose offounding a scholarship in the Gurukula at Hardwar.

Pt. Lekh Ram's life was very regular at Jalandhar. He got up at about 40' clock in the morning. After a bath he performed the Havan and said his prayers. Then he studied the Vedas for about an hour. After this he read books about other religions. Then he continued to write the biography till eleven 0' clock. From eleven to two he took his meals, rested for a while and devoted himself to his household work. From two to five he read books or wrote articles. He was very fond of exercise and never missed it. In the evening he generally took a long walk. He followed this routine not only at Jalandhar, but also at other places.

It was his great desire that his wife should help him to spread the message of the Arya Samaj amongst the women ofIndia. He paid much attention, therefore, to her education. He also took her with him when he went to attend the anniversary of an Arya Samaj. One ofthe many places they visited together in this manner was Mathura. But there his only son fell ill. They therefore returned to Jalandhar with all speed. AtJalandharthe boy passed away, but Panditji bore his grief manfully.

Immediately after this he went to attend the anniversary of the Pasrur Arya Samaj. There he was sent for by the man in charge of the Police station. He said to him, “If any trouble occurs here, you will be held responsible.” The Pandit replied, “I have not come here to fight but to deliver the message of the Vedas. 1 am not concerned with what happens. I will do my duty at all costs.”

.....Pt. Lekh Ram's life was very regular at Jalandhar. He got up at about 40' clock in the morning. After a bath he performed the Havan and said his prayers. Then he studied the Vedas for about an hour. After this he read books about other religions. Then he continued to write the biography till eleven 0' clock. From eleven to two he took his meals, rested for a while and devoted himself to his household work. From two to five he read books or wrote articles. He was very fond of exercise and never missed it. In the evening he generally took a long walk. .....

It has already been said that the Mohammadans were very hostile to Pt. Lekh Ram. They often tried to harm him. First of all, they tried to file a suit against him at Amritsar because he had written a book against them. But they did not succeed. Then cases were started against him at Mizarpur, Allahabad, Lahore, Delhi and Bombay. But they were all dismissed. Similar attempts were made at Peshawar and Meerut. But none of these succeeded. At Delhi the magistrate, Captain Davis, wrote in his judgment that the books written by Pt. Lekh Ram were not in any way objectionable.

On account of these th ings the Arya Samaj ists frequently warned Pt. Lekh Ram. They told him that his life was in danger. But he did not care about his life. In February, 1887, a well built young Mohammadan went to Panditji's house and said, “I was converted to Islam two years ago. But I want to become a Hindu again. Will you please help me.”Panditji said that he would do so as soon as possible. From that day the young man followed Panditji like his shadow. Many Arya Samajists told Panditji that the young man was notto be trusted, but he said, “I do not care. I must do my duty.”

After a few days Pt. Lekh Ram went to Multan. When he came back he found the young man waiting for him in the office of the Arya Pritinidhi Sabha. The youth was wearing a blanket and he spoke in a very low and feeble voice. Pandit ji asked him ifhe was suffering from fever. He replied that he was not feeling well. So they went to a doctor. The doctor said that he had no fever, but seemed to be suffeang from some disorder ofthe blood. He thought of applying some sort of plaster. But the young man said that he would prefer to have some medicine to drink. Pt. Lekh Ram asked the doctor to do this. The doctor then gave him some medicine to drink.

Then Pt. Lekh Ram went home accompanied by this young man. When they got there he sat on a cot on the verandah and began to write an account of the death of Swami Dayanand. After some time his mother said, “I have not yet got any oil from the bazaar.” Panditji then got down from the cot and stretched his limbs. He was probably thinking of going to the bazaar himselfto fetch the oil. The young man was, at that moment, standing close by him. But Panditji never suspected him of evil intentions. It certainly did not occur to him that he was near his death.

Soon the young man saw his chance. He immediately thrust a dagger into Panditji's intestines. Then the blood began to flow and Panditji fell down. For a time he was able to hold on to the murderer without uttering any cry of pain. But he lost so much blood in a short time that he became weak and had to loosen his hold on the culprit. The Murderer at once tried to escape. He had not gone very far, however, when he was caught by Pandit ji's wife. He struck her with a strong piece of wood and she fell down senseless. But just then Pandit ji ‘s mother discovered the crime and cried for help. Other people arrived on the scene. They took Panditji to the hospital where his condition went from bad to worse. But even to the last he did not lose his senses. Indeed, he continued to talk to some of his friends. He also repeated some hymns from the Vedas. At 2 o' clock in the morning he passed away. His last words were, “Do not let the Arya Samaj stop publishing books which explain its mission.”

The next day the dead body was taken to the cremation grounds. The funeral procession was attended by a large number of persons. So tragic was the death that all felt it keenly. When the body was placed on the funeral pyre there was hardly an eye that was dry. The hearts of the Arya Samaj ists were touched most of all. While they were standing round the funeral pyre the Arya Samajist said, “Let us now sink all our differences. Let us make peace.” A peace was made between the two sections of the Arya Samaj, but it did not last long.

Thus Pt. Lekh Ram died manfully for his faith, and in so doing died the death of a martyr.

To be continued.....

With thanks By:
"Makers of Arya Samaj"

संस्कृत वाक्य प्रबोध

शत्रुवशकरणम एवं वैश्यव्यवहारप्रकरणम्

गतांक से आगे –

संस्कृत	हिन्दी
166. निर्जिता अपि दुष्टा विनयेन सत्कर्त्तव्या:।	पराजित किये शत्रुओं का भी विनय के साथ मान्य करना चाहिये।
167. राजप्रजाजना: प्राणवत् परस्परं सम्पो य सुखिनो भवन्तु।	राजा और प्रजा प्राण के तुल्य एक दूसरे की पुष्टि करके सदा सुखी रहें।
168. कर्षिते क्षयरोगवदुभे विनश्यत:।	एक दूसरे को निर्बल करने से दमा रोग के समान दोनों निर्बल होकर नष्ट हो जाते हैं।
169. सदा ब्रह्मचर्यविज्ञानाभ्यां शरीरात्मबलमेधनीयम्।	सब काल में ब्रह्मचर्य और विद्या से शरीर और आत्मा का बल बढ़ाते रहना चाहिये।
170. यथादेशकालं पुरुषार्थेन यथावत् कर्माणि कृत्वा सर्वथा सुखयितव्यम्।	देश काल के अनुसार उद्यम से ठीक ठीक कर्म करके सब प्रकार सुखी रहना चाहिये।
171. वैश्या: कथं वर्त्तेरन्?	बनिये लोग कैसे वर्त्ते?
172. सर्वा देशभाषा लेखाव्यवहारं च विज्ञाय पशुपालन-क्रयविक्रयादि व्यापार-कुसीदवृद्धिकृषि कर्माणि धर्मेण कुर्यु:।	सब देशभाषा और हिसाब को ठीक-ठीक जानकर पशुओं की रक्षा लेनदेन आदि व्यवहार ब्याजवृद्धि और खेती आदि कर्म धर्म के साथ किया करें।

क्रमश: - साभार :- संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित-दिल्ली संस्कृत अकादमी)

आर्य समाज के राष्ट्रीय आर्य नेताओं ने किया स्वामी दयानंद सरस्वती मार्ग का अवलोकन

खबरों की दुनिया

कोटा। आर्य समाज के राष्ट्रीय नेता दिल्ली के पदाधिकारी विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं जोगेंद्र खट्टर महामंत्री अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ ने अपने कोटा प्रवास के दौरान कोटा जवाहर नगर स्थित मुख्य बाजार मे नगर विकास न्यास कोटा द्वारा नामकरण किए गए स्वामी दयानंद सरस्वती मार्ग का अवलोकन किया।

इस बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए आर्य उप प्रतिनिधि सभा कोटा संभाग के महामंत्री अरविंद पांडेय ने बताया कि आर्य नेताओं ने स्वामी दयानंद सरस्वती मार्ग पर नगर विकास न्यास द्वारा लगाए गए नामकरण के बोर्ड का का अवलोकन किया और निर्देश दिया कि नामकरण के कुछ बोर्ड और लगने चाहिए साथ ही मार्ग पर स्थित दुकानदारों से भी नाम के आगे तथा बिल बुक पर पते के रूप मे स्वामी दयानंद सरस्वती मार्ग लिखने का आग्रह किया जाए। इसके लिए कार्य योजना बनाई जाए। इस अवसर पर महामंत्री अरविंद पांडेय ने आर्य नेताओं को जानकारी देते हुए बताया कि इसी मार्ग पर आगे नगर विकास न्यास द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती के नाम पर बनाए गया सामुदायिक भवन भी है। जिसका आर्य नेताओं ने अवलोकन किया तथा भवन में आर्य समाज की ओर से महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती के चित्र को लगाने के निर्देश दिये। इस अवसर पर आर्य नेताओं के साथ संभागीय प्रधान अर्जुन देव चड्ढा मंत्री लालचंद आर्य, संगठन मंत्री गुमानसिंह कुशवाह ,आर्यपुत्र व वरिष्ठ समाजसेवी डॉ वेद प्रकाश गुप्ता व अन्य आर्य जन उपस्थित रहे।

शोक समाचार

श्री मुंशीराम गुलाटी जी का निधन

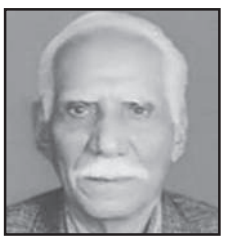

आर्यसमाज पश्चिम विहार एवं वेद प्रचार मंडल पश्चिम दिल्ली के अनेक पदों पर कार्य करने वाले मिश्नरी आर्य श्री मुंशीराम गुलाटी जी का दिनांक 6 अप्रैल, 2021 को 92 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 9 अप्रैल, 2021 को आर्य समाज पश्चिम विहार में सम्पन्न हुई। वे अपने पीछे दो पुत्रों एवं दो सुपुत्रियों का भरा-पूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

डॉ. नरेन्द्र राणा जी को मातृशोक

आर्यसमाज शाहबाद दौलतपुर, दिल्ली के प्रधान डॉ. नरेन्द्र राणा जी की पूज्य माताजी श्रीमती शान्ती देवी जी का दिनांक 8 अप्रैल, 2021 को प्रात: 3:30 बजे निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ शाहबाद शमशान घाट पर किया गया।

श्री लाल बहादुर शास्त्री जी का निधन

आर्यसमाज चौक प्रयाग, प्रयागराज के पूर्व मन्त्री एवं वैदिक विद्वान श्री लाल बहादुर शास्त्री जी का दिनांक 10 अप्रैल, 2021 की सायंकाल निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया।

श्री ओम प्रकाश सलूजा जी का निधन

आर्यसमाज राजनगर (गा.बाद) के संस्थापक सदस्य एवं सभासद श्री ओम प्रकाश सलूजा जी का दिनांक 10 अप्रैल, 2021 को 95 वर्ष की आयु में लम्बी बीमारी के बाद यशोदा अस्पताल में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मों को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

पृष्ठ 5 का शेष

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम को जानकर ...

रही है परन्तु विगत एक सौ वर्षों में देश में नाना मत, सम्प्रदाय, धार्मिक गुरु आदि उत्पन्न हुए हैं जिससे श्रीरामचन्द्र जी की पूजा कम होती गई व अन्यों की बढ़ती गई। भविष्य में क्या होगा उसका पूरा अनुमान नहीं लगाया जा सकता। हां, इतना कहा जा सकता है कि रामचन्द्र जी की पूजा कम हो सकती है और वर्तमान और भविष्य में उत्पन्न होने वाले नये नये गुरुओं की पूजा में वृद्धि होगी। मध्यकाल में श्री रामचन्द्र जी की पूजा व भक्ति ने मुगलों के भारत में आक्रमण व धर्मान्तरण में हिन्दुओं के धर्म की रक्षा की। यदि श्रीरामचन्द्र जी की पूजा प्रचलित न होती तो कह नहीं सकते कि धर्म की अवनति किस सीमा तक होती। संक्षेप में यह कह सकते हैं कि रामायण और रामचरितमानस ने मुगलों व मुगल शासकों के दमनचक्र के काल में हिन्दुओं की धर्मरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

श्री रामचन्द्र जी का जीवन विश्व की मनुष्यजाति के लिए आदर्श है। उसका विवेकपूर्वक अनुकरण जीवन के लक्ष्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्रदान कराने वाला है। वाल्मीकि रामायण के अध्ययन से हम प्रेरणा ग्रहण कर अपने जीवन को वेदानुगामी बना सकते हैं जैसा कि श्री रामचन्द्र जी व उनके समकालीन महर्षि बाल्मीकि जी आदि ने बनाया था। इसमें महर्षि दयानन्द का जीवन व दर्शन सर्वाधिक सहायक एवं मार्गदर्शक है। रामनवमी मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी का पावन जन्मदिवस है। उसको मनाते हुए हमें धर्मपालन करने और धर्म के विरोधियों के प्रति वह भावना रखते हुए व्यवहार करना है जो कि श्री रामचन्द्र जी करते थे। हमें यह भी लगता है कि आधुनिक समय में श्रीरामचन्द्र जी के प्रतिनिधि महर्षि दयानन्द हुए हैं व अब उनका आर्यसमाज उनके समान नई पीढ़ी के निर्माण का कार्य कर रहा है। इस कार्य में हमारे सैकड़ों गुरुकुल लगे हुए हैं। हमारे अनेक विद्वान, साधु व महात्मा श्री रामचन्द्र जी के समान वेद मार्ग पर चल रहे हैं। आज रामनवमी को हमें श्री रामचन्द्र जी को ईश्वर मानकर नहीं अपितु संसार के श्रेष्ठ व श्रेष्ठतम महापुरुष के रूप में उनका आदर व सम्मान करना है और उनके जीवन से शिक्षा लेकर उनके अनुरूप अपने जीवन को बनाना है।

- 196 चुक्खूवाला-2 देहरादून (उत्तराखण्ड)

पृष्ठ 2 का शेष

कब मिटेगा कलंक जरायम पेशा .....

तो आप बिलकुल ठीक सोच रहे हैं असल में पाकिस्तान ने 1948 में जबकि भारत सरकार ने 31 अगस्त 1952 को मजबूरी में क्रिमिनल ट्राइब्स एक्ट समाप्त जरूर किया, किन्तु बड़ी युक्तिपूर्वक इसके स्थान पर हैबिचुअल ऑफेंडर्स एक्ट लागू कर दिया इसका अर्थ यह हुआ कि जो ब्रिटिश विद्रोही समुदाय 1952 तक जन्मजात अपराधी माने जाते थे, वे अब आदतन अपराधी माने जाने लगे।

फर्ज अदायगी के तौर पर इनके उत्थान के लिए कतिपय कमेटियों और आयोगों का गठन भी किया गया लेकिन किसी की सिफारिशों पर अमल नहीं किया गया। इनमें दो प्रमुख राष्ट्रीय आयोग रेनके आयोग ने 2008 में और दादा इदाते आयोग ने जनवरी 2018 में अपनी रिपोर्ट भारत सरकार को सौंप दी थी। लेकिन अभी तक किसी सरकार ने इदाते आयोग की रिपोर्ट को लागू नहीं किया और नतीजा आज भी इन वीर जनजातियों को अपने माथे का कलंक ढोना पड़ रहा है। आज यह आपराधिक जनजाति तो नहीं कहलाती है मगर आज इन्हें विमुक्त जनजाति के नाम से जाना जाता है। चूँकि इनके साथ यह कलंक लगा हुआ है इसलिए समाज ने कभी भी इन्हें स्वीकार नहीं किया। ना समाज ने और ना ही सरकार ने। वर्ष 1948 से अब तक इन जातियों के उत्थान विकास व कल्याण के लिए कुल आठ-नौ कमेटियां व दो आयोग बनाये लेकिन अभी तक इनके लिए बने किसी भी कमीशन की शिफारिश किसी भी सरकार ने नहीं मानी। ये लोग आज भी कलंक को लेकर सड़कों पर तमाशा दिखाकर जीने को मजबूर हैं। हालाँकि आज मुगलों और अंग्रेजों की सच्चाई बताना गुनाह माना जाता है लेकिन आज हमारा दायित्व बनता है कि हम हिन्दू संस्कृति की रक्षक इन वीर जातियों-जनजातियों के लिए आवाज उठाएं ताकि इन्हें इनका अधिकार, इनकी वीरता की गर्वीली विरासत मिल सके। - *सम्पादक*

पृष्ठ 3 का शेष

प्रेरक जीवन के धनी - महात्मा हंसराज जी

परोपकार,सादगी आत्मबोध आदि के भाव जग जाय, कुछ उनके जीवन की छाया व छाप हमारे जीवन में पड़ जाए और कुछ संकल्प-व्रत ले सकें तो जन्म दिन सार्थक बन जायेगा। महापुरुषों के जन्म दिवस, बलिदान दिवस, स्मृति दिवस आदि हमें जगाने व प्रेरणा देने आते हैं। सोचो, समझो और कुछ करो। केवल जलसे जुलूस, लंगर, मेले आदि तक इन कार्यक्रमों को सीमित न करो। केवल ऊपर की बातों से बात न बनेगी। महापुरुषों की मूलात्मा चिन्तन व सन्देश को समझो और पकड़ो तभी हम सच्चे अर्थ में उनकी जय बोलने और श्रद्धांजलि देने के हकदार होंगे। मैं महात्मा हंसराज जी के पावन जन्मोत्सव के पर्व पर उनके व्यक्तित्व, कृतित्व, योगदान आदि को अनेकश: स्मरण एवं नमन करता हूं।

-बी.जे. 29, शालीमार बाग, दिल्ली

वैदिक शगुन लिफाफे
महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में
सिक्के वाले मात्र 500/-रु. सैंकड़ा | बिना सिक्के मात्र 300/-रु. सैंकड़ा
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 12 अप्रैल, 2021 से रविवार 18 अप्रैल, 2021

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 15-16/04/2021 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 14 अप्रैल, 2021

आर्यसमाज कीर्तिनगर का वार्षिकोत्सव एवं ऋषि बोधोत्सव समारोह

आर्य समाज कीर्ति नगर द्वारा 21 से 28 मार्च 2021 तक आयोजित ऋषि बोधोत्सव एवं वार्षिक उत्सव सहर्ष संपन्न हुआ। 21मार्च को सांकेतिक प्रभात फेरी से कार्यक्रम का आरम्भ हुआ, जिसमें आर्यवीर मोटर साइकिलों पर और सदस्यगण ई रिक्शा तथा कारों में जयकारे लगाते हुए, भजन गाते हुए इस प्रभातफेरी में सम्मिलित हुए। श्रीमती कांता आर्य, श्रीमती वीना ओबरॉय, श्री ओम प्रकाश आर्य तथा परिवार, श्री सुरेश तेजी जी तथा परिवार तथा श्रीमती मधु सभरवाल आदि परिवारों ने भव्य स्वागत किया। प्रभात फेरी का समापन आर्य समाज में हुआ जहां श्री अमित सलूजा, श्रीमती मणी तथा आयु अनमोल ने बहुत सुंदर स्वागत किया तथा यज्ञ का प्रसाद भी बांटा। सोमवार 22 मार्च से 27 मार्च तक प्रात: कालीन और सायं कालीन यज्ञ संपन्न हुआ। डॉ. ऋषिपाल शास्त्री जी का सहयोग सराहनीय रहा, सप्ताह भर बने सभी यज्ञिकों का बहुत-बहुत धन्यवाद। जिन्होंने न केवल धर्म लाभ प्राप्त किया बल्कि अपना पूर्ण सहयोग देकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

प्रात: कालीन यज्ञ के उपरांत सुश्री अंजलि बहन जी ने भजन प्रस्तुत किए। सांय यज्ञ के उपरांत 6 से 8 बजे तक 2 घंटे का कार्यक्रम लगातार आर्य संदेश टीवी पर भी प्रसारित हुआ।

26 मार्च को एक विशेष कार्यक्रम आर्य वीरों और वीरांगनाओं द्वारा आयोजित किया गया जिसमें श्रीमती रिचा सचदेवा जी के सहयोग से सेवा प्रकल्प महिला मंडल के पदाधिकारियों ने भी भाग लेकर बच्चों को प्रोत्साहित किया।

प्रतिदिन यह कार्यक्रम फेसबुक पर श्री विनीत बहल मंत्री जी तथा सायं का कार्यक्रम महाशय धर्मपाल एम डी एच आर्य मीडिया सेंटर द्वारा आर्य संदेश टीवी प्रसारित होता रहा।

28 मार्च 2021 को यज्ञ की पूर्णाहुति पर पांच यज्ञ कुण्डों पर आर्य सदस्य यजमान बने, आदरणीय श्री धर्मपाल आर्य जी यशस्वी प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की उपस्थिति ने सबको प्रोत्साहित किया और प्रधान जी ने सदस्यों को यज्ञ का महत्व बताया, इसके उपरांत सुश्री अंजलि आर्य जी द्वारा आरम्भ हुआ। आर्य वीरों ने राजा जनक जी के दरबार में हो रहे वेदों पर शास्त्रार्थ पर एक नाट्य रूपांतर प्रस्तुत किया। वीरों ने स्वयं के सहयोग से पूरी व्यवस्था करते हुए इस को तैयार किया, बहुत सुंदर प्रस्तुति दी। श्री ष्ण आर्य, श्री रोशन आर्य, श्री निरंजन आर्य एवं श्री सुशील आर्य का तथा नन्हे वीर - वीरांगनाओं को शुभकामनाएं व शुभाशीष। श्री प्रेम अरोड़ा जी का स्वागत सम्मान किया गया तथा उन्होंने कार्यक्रम में हुए अपने अनुभव सुनाए तथा छोटे बच्चों द्वारा प्रस्तुति को सराहा।

ऋषि लंगर का श्री संदीप बजाज जी, श्रीमती सुनीता बहल जी, श्रीमती सुरभि आर्य का वितरण किया तथा श्री सुरेश तेजी जी ने व्यवस्था बनाई।

- *सतीश आर्य, प्रधान*

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य
अब
amazon
पर भी उपलब्ध
अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
https://amzn.to/3i3rKI7
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

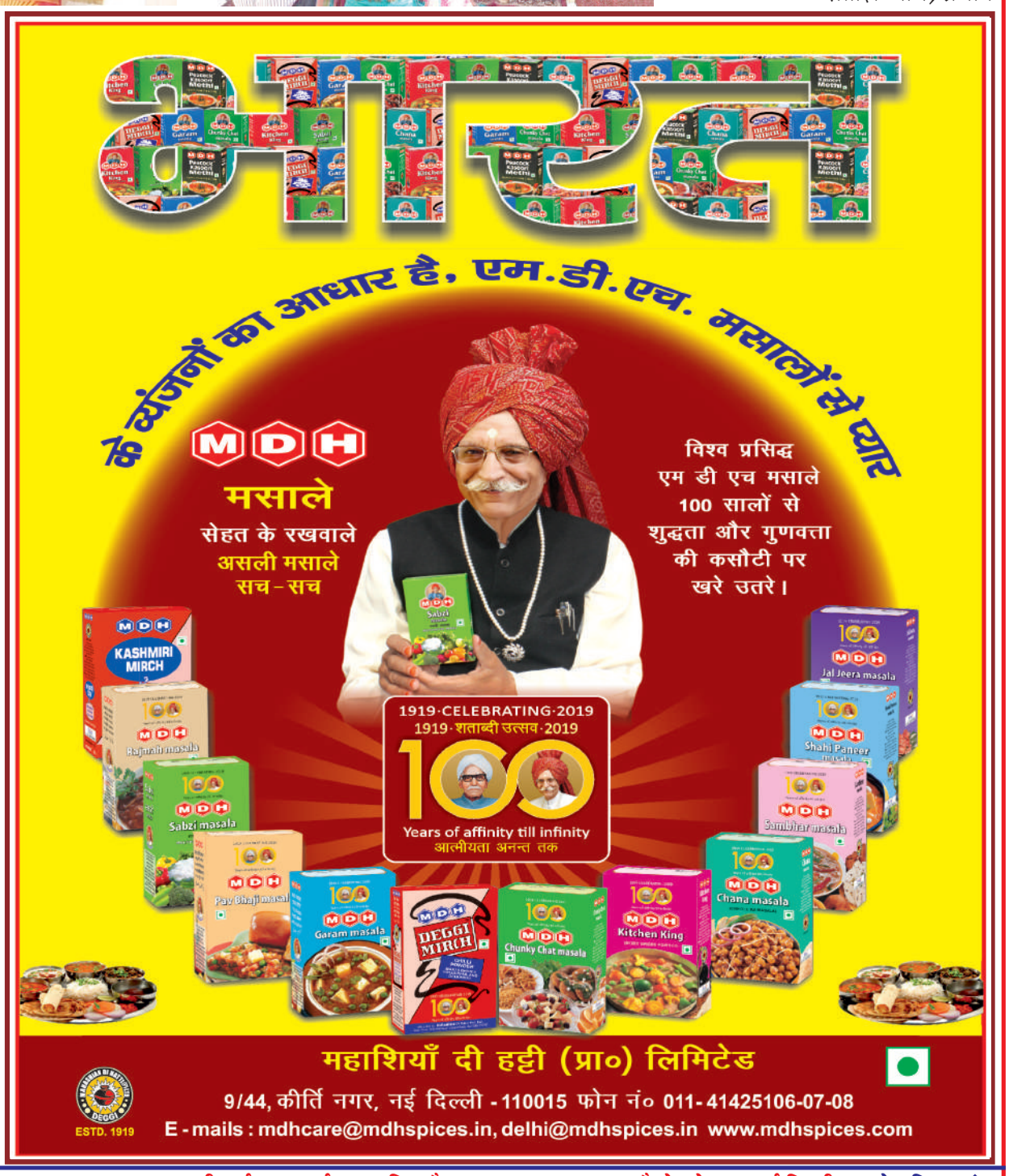

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह